दलित एवं आदिवासी जीवन पर आधारित हिन्दी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन (सन् 2005 से 2020 तक)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा के अंतर्गत हिंदी विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधार्थी

रवि कान्त मीणा

सह-निर्देशक

डॉ. सूरज प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर

निर्देशिका

डॉ. नमस्या
एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा 282005

2022

हिन्दी दलित एवं आदिवासी साहित्य की परिचयात्मक पृष्ठभूमि -

विगत लगभग चार दशकों से लगातार हिंदी साहित्य और विमर्श की दुनिया में दलित एवं आदिवासी साहित्य नए सवालों एवं पहचान के साथ लिखा जा रहा है। ऐसे में इनके इतिहास एवं परंपराओं को गहनता एवं समग्रता के साथ जानना व समझना भी बहुत ज़रूरी है। ताकि इन विमर्शों को हम ठीक से समझ सकें। यहाँ हमारा लक्ष्य दलित कहानियों एवं आदिवासी कहानियों की तुलना करना और उसके अंतःसंबंधों की पड़ताल करना है। साहित्य एक बेहतर समाज का निर्माण करता है। उसमें दलित साहित्य एवं आदिवासी साहित्य किस तरह से भूमिका निभा सकते हैं, यहाँ हम यह समझने का प्रयास करेंगे।

'दलित' का शाब्दिक अर्थ है दमित, कुचला या उपेक्षित व्यक्ति लेकिन इस धारणा के तहत हम इसमें तमाम वंचित तबके, उत्पीड़ित समुदाय एवं समाज को भी शामिल करते हैं। धीरे-धीरे इसका व्यापक अर्थ दलित पैंथर्स नामक आंदोलन ने भी अपनाया और बहुत सारे स्थानों पर भी इसका प्रयोग हुआ, लेकिन पिछले चार दशकों से भारतीय राजनीति और समाज में दलित शब्द नए संदर्भ एवं अर्थ ग्रहण कर रहा है। दलित चिंतकों ने इस पर व्यापक विचार विमर्श किया और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि दलित शब्द अब तमाम वंचित व उपेक्षित तबकों के लिए नहीं बल्कि भारतीय संविधान में सम्मिलित अनुसूचित जाति (शेड्यूल कास्ट) के लिए प्रयोग किया जायेगा,

जो सम्मिलित रूप से लंबे समय से अस्पृश्यता का दंश झेल रही है और भारतीय जाति व्यवस्था के सबसे निचले पायदान पर रही है। इस प्रकार दलित का संदर्भित अर्थ हुआ वह अनुसूचित जाति या अस्पृश्य जातियाँ जिनके अधिकारों के लिए ज्योतिबा फुले एवं बाबासाहेब आंबेडकर ने संघर्ष किया और संविधान में उनके लिए विशेष प्रावधान करवाया। दलित चिंतन परंपरा में बुद्ध, कबीर, रैदास, ज्योतिबा फुले एवं बाबासाहेब आंबेडकर को सम्मिलित किया जाता है।

दलित विमर्श को समझने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- दलित साहित्य की अवधारणा। इसके बावज़ूद अभी तक दलित साहित्य की कोई सर्वमान्य अवधारणा विकसित नहीं हो पाई है। यह तय है कि दलित साहित्य

दलितों से संबंधित साहित्य का नाम है लेकिन यह संबंध किस तरह का है। इस मामले में विवाद है। विभिन्न आधारों पर दलित साहित्य में दो तरह के साहित्य को सम्मिलित किया जाता है।

1 गैरदलितों के द्वारा दलितों पर लिखा गया साहित्य (सहानुभूति का लेखन)

2 दलितों के द्वारा दलितों के बारे में लिखा गया साहित्य (स्वानुभूति का लेखन)

दलित साहित्य के भीतर गैरदलित साहित्यकारों द्वारा दलितों के प्रति सहानुभूति में लिखा गया साहित्य है। गैरदलितों के द्वारा लिखे गए साहित्य का एक अपना इतिहास है। इसमें हम प्रेमचंद और निराला आदि को शामिल कर सकते हैं।

दूसरा मत दलित साहित्य के बारे में है कि दलितों के द्वारा दलितों के बारे में लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। दलित समुदायों में पैदा हुए लेखक स्वानुभूति के परे उस दर्शन के साथ इस साहित्य की दुनिया में उतरते हैं और अपने दुख दर्दों का बयान करते हैं। दलित स्वानुभूति को ध्यान में रखकर जो अपने जीवन, समाज और अपनी अस्मिता के संघर्ष के लिए लिखे गये साहित्य को दलित साहित्य कहा जायेगा।

आदिवासी साहित्य की अवधारणा की बात की जाए तो आदिवासी शब्द को अनुसूचित जनजाति के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है, हालांकि इसको लेकर स्वयं आदिवासियों के बीच सहमति नहीं है और आदिवासी चिंतक इसको लेकर विभिन्न राय रखते हैं कि अनुसूचित जनजाति में वह भाव बोध नहीं है जो आदिवासी शब्द में है। इसलिए वह आदिवासी की वकालत करते हैं और आदिवासी शब्द को 'इंडिजेनस' या 'एबोरिजिनल' या 'नेटिव' के पर्याय के रूप में देखते हैं। हिंदी में आदिवासी पद का प्रयोग देश के मूल निवासियों और उनके वंशजों के लिए होता है। जिन्हें संवैधानिक भाषा में अनुसूचित जनजाति कहा जाता है।

आदिवासी वैचारिकी में हम बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, सिद्धू , कान्हू, ताना भगत, नागा रानी गाइदिल्यू, गोविंद गुरु, जयपाल सिंह मुंडा और रामदयाल मुंडा आदि के नाम सम्मिलित कर सकते हैं, क्योंकि आदिवासियों के हक के लिए इन्होंने आवाज उठाई थी। इन्होंने आदिवासियों को संगठित करने पर बल दिया था।

सामान्यतः आदिवासी साहित्य के बारे में बात करते समय यह कहा जाता है कि यह लोक साहित्य है, यह

अनगढ़ साहित्य है, यह प्रतिरोध का साहित्य है। लेकिन आदिवासी चिंतक वंदना टेटे इन तीनों मतों का खंडन करती हैं और आदिवासी साहित्य को लेकर नए स्पष्टीकरण के साथ में आदिवासी साहित्य की अवधारणा प्रस्तावित करती हैं। आदिवासी संस्कृति, जीवन दर्शन व उनकी विश्व दृष्टि के प्रति एक नई दृष्टि की मांग करती हैं। वह इन तीनों अवधारणाओं से असहमत हैं।

आदिवासी साहित्य प्रकृति और प्रेम के इर्द-गिर्द जीवन की अदम्य जिजीविषा को अभिव्यक्त करने वाली अभिव्यक्ति है। उनका नाचना-गाना और तमाम कलाएँ पूरे समुदाय की धरोहर हैं, वहाँ ऐसा नहीं है कि एक व्यक्ति लिखता है, दूसरा नाचता है, तीसरा गाता है, चौथा संगीत बजाता है। एक ही व्यक्ति बहुमुखी प्रतिभा का धनी है, वह एक साथ कई भूमिकाएँ निभाता है और वह जो भूमिका निभा रहा है वह भी सामूहिक हैं। तमाम गीतों की रचना सामूहिक रूप से होती है, सामूहिक रूप से गाए जाते हैं एवं सामूहिक नृत्य किये जाते हैं। सभी मत्वपूर्ण है यहाँ पर कोई भी काम श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं हैं।

ऐसे में आदिवासी साहित्य सामूहिक रूप से एक सांस्कृतिक समुदाय से संबंधित साहित्य है। जैसे दलित साहित्य के संदर्भ में दलित चेतना वह तत्त्व हो सकता है जिससे दलित साहित्य को रेखांकित करें। उसी तरह आदिवासी साहित्य की बुनियादी शर्त उसमें आदिवासी जीवन-दर्शन का होना है। आदिवासी साहित्य उस परिवर्तनगामी चेतना का रचनात्मक हस्तक्षेप है जो देश के मूल निवासियों के वंशजों के प्रति किसी भी प्रकार के भेदभाव का पुरज़ोर विरोध करती है। इनके जल, जंगल, ज़मीन और जीवन को बचाने के हक़ में, उनके आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ खड़ा होता है। इसकी बुनियादी विशेषताएँ प्रेम और प्रकृति के प्रति एक उल्लास, तादात्म्य और सामंजस्य का रिश्ता है।

शोध विषय का परिचय -

कहानियाँ केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं मानी जा सकती हैं, बल्कि यह समाज के यथार्थ चित्रण का एक सशक्त माध्यम भी हैं। कहानियाँ समाज के बदलते प्रत्येक पहलू को उजागर करने में सक्षम होती हैं। परिवर्तन प्रत्येक समाज का नियम है, परिवर्तन का प्रभाव मानव समुदाय पर किसी ना किसी रूप में अवश्य पड़ता है।

इसी प्रक्रिया के दौरान आधुनिक मानव समाज में कुछ बदलाव आए हैं और लेखन की दुनिया में कहानी के रूप में यह विकसित हुआ है।

दलित एवं आदिवासी भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। इन्हें तथाकथित मुख्यधारा के समाज ने हजारों वर्षों से स्वयं से दूर रखा है तथा इनको निम्नतम स्तर पर जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। 20वीं सदी के आखिरी दो दशकों से दलित एवं आदिवासी साहित्य का सृजन प्रारंभ हुआ। जिसमें दलित एवं आदिवासी जीवन पर आधारित कहानियाँ, कविताएँ, आत्मकथाएँ एवं उपन्यास लिखे गए। इससे पूर्व हिंदी में दलित एवं आदिवासियों पर कहानियाँ लिखी गईं लेकिन यह गैरदलितों एवं गैर-आदिवासियों द्वारा लिखी जा रही थीं जिनमें स्वानुभूति के अपेक्षा सहानुभूति अधिक थी।

दलित विचारकों एवं चिंतकों द्वारा जब स्वानुभूति का प्रश्न उठाया गया तब जाकर दलित साहित्य को एक नई पहचान मिली। दलित कहानियों में स्वयं द्वारा भोगे गए कटु अनुभवों एवं समाज की विकृत मानसिकता का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। दलित कहानियों में प्रायः ब्राह्मणवादी समाज द्वारा उनके प्रति किए गए अमानवीय एवं पशुवत व्यवहार का उल्लेख मिलता है। अपने प्रति हुए अन्याय पूर्ण व्यवहार एवं अस्पृश्यता रूपी दंश से पीड़ित दलितों की अर्त से निकली हुई आवाज उनकी कहानियों में व्यक्त हुई है। दलित कहानियों का प्रारंभ हम 80 के दशक से मान सकते हैं। दलितों पर मुख्यधारा के समाज द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहार एवं शोषण दलित कहानियों में मुख्य रूप से निखर कर सामने आता है।

दलित कहानियों में प्रतिरोध का स्वर मुखर होता है, यहाँ पर सदियों से सहते आए अन्याय के प्रति विरोध प्रकट होता है । दलितों को इस मनुवादी वर्ण-व्यवस्था द्वारा पशुओं से भी बदतर स्थिति में जीने, घृणित कार्य करने और जिंदगी बिताने के लिए गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर किया जाता है। हजारों सालों से जाति एवं वर्ण-व्यवस्था पर आधारित भारतीय समाज में दलितों की जो दुर्गति हुई है उसका उल्लेख इन कहानियों में दृष्टिगत होता है लेकिन परिस्थितियाँ बदल रही हैं। दलित एवं आदिवासी भी शिक्षित होने के साथ-साथ अस्पृश्यता, वर्णभेद आधारित असमानता आदि से ऊपर उठने का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास हमें सभी दलित

कहानीकारों की कहानियों में देखने को मिलता है। वर्तमान समय में परिस्थितियों के परिवर्तन के फलस्वरुप अब कहानियों में प्रतिरोध दृष्टिगत होता है। दलित कहानियों में मुख्यतः अम्बेडकरवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। दलित कहानी में प्रतिरोध का भाव है जिसमें अप्रासंगिक हो चुकी परंपराओं से पूर्णतया छुटकारा प्राप्त करने की कोशिश की गई है और नई परंपरा को लागू करने का प्रयास है। दलित जिस पीड़ा को सदियों से झेलता आ रहा है, उस अस्पृश्यता, अन्याय, अत्याचार एवं गुलामी की बेड़ियों को तोड़ते हुए वह अब मुख्यधारा के समाज में शामिल होने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देता है।

दलित कहानियों में समाज व्यवस्था के प्रतिरोध एवं न्याय की असीम लालसा दिखाई देती है । दलित कहानियाँ पूर्ण रूप से मनुवादियों द्वारा निर्मित धर्म, भाग्य, भगवान, परंपरा एवं अंधविश्वास जैसे मान्यताओं का प्रतिकार करती हैं। दलित कहानियों में आक्रोश, संवेदना और साथ ही न्याय पाने की उत्कट इच्छा है। सदियों से अन्याय सहते आए दलितों में अब अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा जाग चुकी है।

श्योराज सिंह बेचैन दलित कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी कहानियों में जाति के सवाल को प्रमुखता से उठाया गया है। इनकी प्रसिद्ध कहानियों में ‘शोध प्रबंध’, ‘रावण’, ‘शिष्या-बहू’ आदि हैं। सूरजपाल चौहान दलित कहानी के प्रतिनिधि कहानीकार हैं। इनके कहानियों में दलित वर्ग की नई पीढ़ी के अंदर दर्द को सामने रखती हैं। 'बहरूपिया' इनकी प्रसिद्ध कहानी है। जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में दलित जीवन के विभिन्न धरातलों का उल्लेख मिलता है। 'खरोंच' इनका कहानी संग्रह है। रजत रानी मीनू एक प्रमुख महिला दलित कहानीकार हैं। इनका कहानी संग्रह ‘कौन है हम’, है। रत्नकुमार सांभरिया ने दलित समाज की वास्तविक स्थिति को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं 'दलित समाज की कहानियाँ' और 'एयरगन का घोड़ा' । मुकेश मानस का कहानी संग्रह 'पंडिज्जी का मंदिर और अन्य कहानियाँ' हैं, जिसमें दलित समाज की समस्याओं को उठाया गया है। अनीता भारती प्रमुख दलित महिला लेखिका हैं। इनकी कहानियों में जातिगत व्यवस्था एवं परंपरा पर करारा व्यंग्य किया गया है। 'एक थी कोठे वाली' इनका कहानी संग्रह है। कैलाश चंद चौहान दलित कहानीकारों की दूसरी पीढ़ी से आते हैं। इनकी कहानी ‘संजीव का ढाबा’

जातिवादी मानसिकता को उजागर करने के साथ-साथ दलित समाज में जागी कुछ करने की प्रेरणा को दर्शाती है। जितेंद्र बिसारिया दलित कहानी के उभरते हुए स्वर है। 'नए सजन घर आए' इनकी प्रसिद्ध कहानी हैं।

आदिवासी कहानियों में वर्ण-व्यवस्था आधारित भेदभाव एवं जाति अंतर दलितों के अपेक्षा कम है। यहाँ पर शोषणकारी दिकू है, साथ ही आदिवासियों का मूलाधार जल, जंगल और ज़मीन है, जिसके इर्द-गिर्द इनका जीवन घूमता रहता है। आदिवासी कहानियों में उनके जीवन के विविध रूप एवं आयाम हमारे सम्मुख प्रकट होते है। आदिवासी वर्षों तक मुख्यधारा से दूर रहने की वजह से जाति व्यवस्था के उतने संपर्क में नहीं आए जितने दलित, साथ ही वे अपनी संस्कृति से भी जुड़े हुए हैं।

रोज केरकेट्टा की कहानियों में झारखंड के आदिवासी समाज के खान-पान, रहन-सहन खेती-बाड़ी, पहनावा, पर्व-त्यौहार आदि संस्कृति के कई पहलुओं को उजागर किया गया है। एलिस एक्का एक प्रमुख आदिवासी कथाकार हैं जिन्होंने साठ के दशक से ही कहानियाँ लिखना प्रारंभ कर दिया था। मूलतः इनकी कहानियों में स्त्री एवं प्रकृति को केंद्र में रखा गया है। वंदना टेटे द्वारा 'एलिस एक्का की कहानियाँ' संग्रह संपादित है। रामदयाल मुंडा प्रसिद्ध विचारक और नेता के साथ-साथ अच्छे कहानीकार भी हैं। इनकी कहानी 'उस दिन रास्ते में' है। हरिराम मीणा की कहानी 'सांवड्या' राजस्थान में मीणा आदिवासियों की परंपरा और उनके समाज को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण कहानी है। संजीव ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से आदिवासी जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया है। संजीव की कहानी 'दुनिया की सबसे हसीन औरत' इनकी प्रसिद्ध कहानी है। डॉ. केदार प्रसाद मीणा आदिवासी कहानीकार हैं जिनकी कहानी 'कामरेड मीणा' है। रणेन्द्र की कहानी 'वह बस धूल थी' एक उरांव लड़की सोमा कुजूर के संघर्ष की कहानी है। मंगल सिंह मुंडा आदिवासी साहित्य में जाना पहचाना नाम है। इनकी कहानी 'महुआ का फूल' आदिवासी स्त्री संघर्ष की कहानी है। वाल्टर भेंगरा 'तरुण' की कहानी 'जंगल की ललकार' वन विभाग और पुलिस के दमन को दर्शाने वाली कहानी है। शंकर लाल मीणा का कहानी संग्रह 'आखिर कब तक' है, जिसमें आदिवासियों से संबंधित समस्याओं को उठाया गया है। अश्विनी कुमार 'पंकज' का कहानी संग्रह 'आदिवासी प्रेम कहानियाँ' है। रूपलाल बेदिया की बुंदेलखंड क्षेत्र के प्रसिद्ध आदिवासी कहानीकार

हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानी 'शहर के दाग का दान' है। शिव कुमार पांडे की कहानी 'भगोरिया की वाट' भील आदिवासियों में प्रचलित परंपराओं को दर्शाती है। पुन्नी सिंह द्वारा रचित कहानी 'लकड़बग्घे' में कहानीकार ने सहरिया आदिवासियों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। शेखर मल्लिक ने अपनी कहानियों में आदिवासी समाज में प्रचलित भयानक कुप्रथाओं की त्रासदी को सामने रखा है। इनकी प्रसिद्ध कहानी 'डायनमारी' है। राकेश कुमार सिंह की कहानी 'हाका' में आदिवासियों की सहनशीलता एवं उनके स्वाभिमान को दर्शाया गया है। जोराम यालाम नाबाम ने अपनी कहानियों में अरुणाचल प्रदेश के ग्रामीण पारिवारिक जीवन को बिना किसी बनावट और शैली के प्रस्तुत किया है।

शोध विषय का उद्देश्य एवं महत्त्व -

प्रस्तावित शोध विषय "दलित एवं आदिवासी जीवन पर आधारित हिन्दी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन" (2005 से 2020 तक) के अंतर्गत दलितों एवं आदिवासियों के जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का अनुसंधान कार्य के द्वारा तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। शोध कार्य के माध्यम से दलित एवं आदिवासी समाज की समस्याओं, विडंबनाओं, परिस्थितियों को समाज के सम्मुख रखने का एक प्रयास रहेगा। अधिकांशतः आदिवासी साहित्य को दलित साहित्य का एक हिस्सा मान लिया जाता है, लेकिन आदिवासी साहित्य और दलित साहित्य दोनों अलग-अलग विमर्श हैं। इन दोनों के मूल में स्थित अंतर को स्पष्ट करना या दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करना शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश्य रहेगा, साथ ही हिन्दी की दलित एवं आदिवासी कहानियों की अन्तःवस्तु के स्वरूप का अध्ययन कर उसका विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही दलित एवं आदिवासी प्रतिनिधि कहानियों की अन्तःवस्तु का पृथक-पृथक अध्ययन करते हुए दोनों के बीच साम्य-वैषम्य को खोजकर उनका मूल्यांकन करते हुए शोध परक निष्कर्ष निकाले जाएंगे।

दलित एवं आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त रूढ़िवादी परंपराओं, अंधविश्वासों, सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति, दलितों और आदिवासियों के जीवन, संघर्ष, शिक्षा व्यवस्था, वर्णव्यवस्था तथा सामाजिक बंधनों के नाम पर शोषित-पीड़ित, खनन एवं बहुउद्देशीय परियोजनाओं के कारण

विस्थापित आदिवासियों और दलितों की दयनीय दशा का अध्ययन किया जाएगा। दलित एवं आदिवासी कहानियों के माध्यम से दलित एवं आदिवासी जीवन परिस्थितियों को सुधी पाठकों से परिचित कराना है। जिससे लोगों का जातिभेद एवं वर्णव्यवस्था के कारण दलितों एवं आदिवासियों के प्रति रूढ़िवादी मानसिकता में सुधार कर मनुष्यता को स्थापित करने हेतु जागृत किया जा सके। हिंदी दलित आदिवासी कहानियों के स्वरूप का अध्ययन करते हुए विभिन्न विद्वानों के योगदान पर विचार प्रस्तुत किए जाएंगे तथा प्रमुख दलित आदिवासी कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा। दलित एवं आदिवासी कहानियों में जीवन के संघर्ष को सामाजिक सरोकारों से जोड़कर अनोखे शिल्प और भाषा की सघन बनावट के जरिए किस तरह गढ़ा है उसका गहनता से विश्लेषण किया जायेगा। दलित एवं आदिवासी कहानीकारों के कथ्य एवं शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन करना व कलात्मक उपलब्धियों को उजागर किया जायेगा।

इन सब से पृथक मुख्य उद्देश्य है कि मेरे इस शोध कार्य से आने वाले भावी पीढ़ी लाभान्वित हो। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध-कार्य संतुलित दृष्टि का प्रयास मात्र रहेगा। मेरे शोध के द्वारा साहित्य एवं समाज को एक नवीन विचारधारा देने का एक तुच्छ सा प्रयास भर रहेगा। उनका ज्ञानवर्धन हो तथा दलित-आदिवासी समाज की स्थिति में सुधार हेतु जागरूकता उत्पन्न हो सके, साथ ही इन समुदायों के प्रति गलत मानसिकता रखने वाले लोगों के दृष्टिकोण में सकारात्मक सुधार हो सके।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता -

प्रस्तावित शोध विषय "दलित एवं आदिवासी जीवन पर आधारित हिन्दी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन" (सन् 2005 से 2020 तक) से संबंधित कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। शोधगंगा जैसे साइट से जांचने के बाद ज्ञात हुआ कि हिंदी दलित-आदिवासी कविताओं, उपन्यासों पर शोध कार्य हुए हैं, साथ ही दलित कहानियों पर भी कई काम हुए हैं लेकिन अब तक दलित एवं आदिवासी कहानियों पर कोई भी तुलनात्मक शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः यह शोध कार्य पूर्णतया नवीन एवं मौलिक है। मेरे शोध-कार्य से पूर्व हिंदी में दलित एवं आदिवासी कहानियों को लेकर जो शोध कार्य हुए हैं। उनकी सूची नीचे दी जा रही है-

1 “समकालीन हिंदी कहानी : दलित विमर्श”, शोधार्थी मोहम्मदरफी एच. हंचिनाल, गोवा विश्वविद्यालय, तालेगांव, गोवा, 2015

2 “हिंदी दलित कहानी में व्यवस्था विरोधी स्वर के स्वरूप का अध्ययन” (सन् 1995 से 2014 तक) शोधार्थी नीलम दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा, 2019

3 “समकालीन कथा साहित्य और आदिवासी महिला की अस्मिता” शोधार्थी यास्मीन अख्तर सिद्दीकी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, 2016

4 “समकालीन कथा-साहित्य में आदिवासी जीवन” शोधार्थी ललिता श्रीवास्तव, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी, स्वायत्तशासी (संबद्ध महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी) 2018

साहित्य सर्वेक्षण -

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है-

1 - दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,

2 - केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

3 - जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

4 - दिल्ली विश्वविद्यालय

5 - के. एम. आई., आगरा

शोध प्रविधि -

“दलित एवं आदिवासी जीवन पर आधारित हिन्दी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन” (सन् 2005 से 2020 तक) साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी शोध कार्य को करते समय शोधार्थी को शोध-पद्धति का अनुसरण करना होता है। दलित एवं आदिवासी कहानीकारों की कहानियों की अभिव्यक्ति को समझने व समाज से परिचित कराने हेतु गहन व समग्र दृष्टिकोण से गंभीर अध्ययन की आवश्यकता होगी। प्रस्तावित शोध-कार्य को करते समय शोध की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए,

विभिन्न आधार एवं संदर्भ ग्रंथों को देखते हुए, प्रस्तावित शोध-कार्य में तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, विचारात्मक एवं समाजशास्त्रीय आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध की आवश्यकतानुसार प्रश्नावली, संबंधित समुदाय के व्यक्तियों का साक्षात्कार, आदिवासी एवं दलित क्षेत्रों का अवलोकन आदि के साथ-साथ साहित्यिक सर्वेक्षण, शोध पत्र, मैगज़ीन, पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें, शब्दकोश विश्वकोश एवं इंटरनेट आदि का उपयोग किया जाएगा।

रूपरेखा

प्रथम अध्याय - दलित एवं आदिवासी साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन

1.1 दलित साहित्य का स्वरूप एवं सैद्धांतिकी

1.2 दलित साहित्य की विकासात्मक पृष्ठभूमि

1.3 आदिवासी साहित्य का स्वरूप एवं सैद्धांतिकी

1.4 आदिवासी साहित्य की विकासात्मक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय - दलित कहानी का उद्भव एवं विकास

2.1 दलित कहानियों का विकासात्मक अध्ययन एवं प्रमुख कथाकारों का परिचय

2.2 कहानियों का वर्तमान स्वरूप

2.3 दलित कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष

2.4 दलित कहानियों में समस्याएँ, संघर्ष एवं प्रतिरोध

तृतीय अध्याय - आदिवासी कहानी का उद्भव एवं विकास

3.1 आदिवासी कहानियों का विकासात्मक अध्ययन एवं प्रमुख कथाकारों का परिचय

3.2 कहानियों का वर्तमान स्वरूप

3.3 आदिवासी कहानियों का सांस्कृतिक पक्ष

3.4 आदिवासी कहानियों में समस्याएँ, संघर्ष एवं प्रतिरोध

चतुर्थ अध्याय - दलित एवं आदिवासी कहानियों में तथ्यपरक साम्य एवं वैषम्य

4.1 दलित एवं आदिवासियों की सामाजिक स्थिति

4.2 दलित एवं आदिवासियों की राजनीतिक स्थिति

4.3 दलित एवं आदिवासियों की आर्थिक स्थिति

4.4 दलित एवं आदिवासियों की धार्मिक स्थिति

4.5 दलित एवं आदिवासियों की शैक्षणिक स्थिति

4.6 दलित एवं आदिवासियों की सांस्कृतिक स्थिति

पंचम अध्याय - दलित एवं आदिवासी साहित्य के मौखिक स्वरूप का अनुशीलनात्मक विश्लेषण

5.1 दलित मौखिक साहित्य एवं सांस्कृतिक तत्त्वों का अनुशीलन

5.2 दलित समुदाय के व्यक्तियों और लेखकों के साक्षात्कारों का विश्लेषण

5.3 आदिवासी मौखिक साहित्य एवं सांस्कृतिक तत्वों का अनुशीलन

5.4 आदिवासी समुदाय के व्यक्तियों और लेखकों के साक्षात्कारों का विश्लेषण

षष्ठ अध्याय - दलित एवं आदिवासी कहानियों में शिल्पगत साम्य एवं वैषम्य

6.1 दलित एवं आदिवासी कहानियों की भाषा शैली

6.2 दलित एवं आदिवासी कहानियों में नए बिम्ब एवं प्रतीक

6.3 दलित एवं आदिवासी कहानियों का सौंदर्यबोध

6.4 दलित एवं आदिवासी कहानियों में मुहावरे एवं लोकोक्तियां

- उपसंहार
- परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

शब्दकोश

विश्वकोश

संदर्भ ग्रंथ

वेबसाइट्स

पत्र-पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

विशेष- निर्देशक के परामर्श से अध्यायों में 20% परिवर्तन किया जा सकता है।

आधार ग्रंथ -

1 - अपना-अपना युद्ध, वाल्टर भेंगरा तरुण, सत्य भारती प्रकाशन, 2014

2 - अम्मा और अन्य कहानियाँ, ओमप्रकाश वाल्मीकि, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2008

3 - आखिर कब तक, शंकर लाल मीणा, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 2013

4 - आदिवासी कहानियाँ, केदार प्रसाद मीणा, अलख प्रकाशन, 2011

5 - आदिवासी प्रेम कहानियाँ, अश्विनी कुमार 'पंकज', राधाकृष्ण पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2019

6 - आवाजें, मोहनदास नैमिशराय, दया पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली, 2011

7 - एलिस एक्का की कहानियाँ, सं. वंदना टेटे, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन, 2014

8 - खरोंच,जयप्रकाश कर्दम, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013

9 - चारपाई, रजनी दीसोदिया, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

10- दलित समाज की कहानियाँ, रत्न कुमार सांभरिया, अनामिका पब्लिकेशन, 2011

11 - नया ब्राहमण, सूरजपाल चौहान, हिंदी बुक सेंटर नई दिल्ली, 2014

12 - पगहा जोरी जोरी रे घाटो, रोज केरकट्टा, देशज प्रकाशन, 2009

13 - पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियाँ, सं. रमणिका गुप्ता, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2011

14 - बिरुवार गमछा तथा अन्य कहानियाँ, रोज केरकेट्टा, प्रभात प्रकाशन, 2016

15 - भरोसे की बहन, श्योराज सिंह चौहान, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2010

16 - मोर का पंख तथा अन्य कहानियाँ, टेकचंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

17 - राजकुमारों के देश में, पीटर पाल एक्का, सत्य भारती प्रकाशन, रांची, 2014

18 - संघर्ष, सुशीला टांकभौरे, शरद प्रकाशन, अहमदाबाद, गुजरात, 2006

19 - संजीव का ढाबा, कैलाश चंद्र चौहान, आरोही प्रकाशन दिल्ली, 2012

20 - साक्षी है पीपल , जोराम यालाम नाबाम, अनुज्ञा बुक्स, 2019

संदर्भ ग्रंथ -

1 - दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2001

2 - दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण- 2013

3 - डॉ. विजयपाल ,दलित साहित्य का मूल्यांकन , श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली, 2014

4 - कालीचरण स्नेही, दलित दुनिया , नवभारत प्रकाशन दिल्ली , 2009

5 - सूरज बडत्या, सत्ता संस्कृति और दलित सौंदर्यशास्त्र, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2010

6 - शरण कुमार लिंबाले अनुवाद रमणिका गुप्ता दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2005

7 - प्रोफेसर चमनलाल, दलित साहित्य एक मूल्यांकन, राजपाल एंड संस, दिल्ली, संस्करण 2012

8 - हरिराम मीणा, आदिवासी दुनिया , नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

9 - आदिवासी स्वर और नई शताब्दी , संपादक रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन , 2008

10 - आदिवासी कौन? रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

11 - आदिवासी लोक भाग-1 , रमणिका गुप्ता, शिल्पायन, दिल्ली ,2006

12 - आदिवासी लोक भाग-2 , रमणिका गुप्ता, शिल्पायन, दिल्ली, 2006

13 - आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य, रसाल सिंह बन्ना राम मीणा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2014

14 - आदिवासी संघर्ष गाथा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005

पत्र-पत्रिकाएं -

- वांङ्मय - अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
- अरावली उद्घोष- उदयपुर, राजस्थान
- मंतव्य - लखनऊ
- हंस - दिल्ली
- दलित अस्मिता - नई दिल्ली
- युद्धरत आम आदमी - दिल्ली
- अखड़ा - झारखंड
- आदिवासी साप्ताहिक - राँची

वेब साइट्स -

- http://inflibnet.ac.in
- shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://hiwikipedia.org
- http://booksgoogle.co.in